Toppersnotes
Unleash the topper in you

2nd – ग्रेड

वरिष्ठ अध्यापक

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

प्रथम – प्रश्न पत्र

भाग – 3

सामान्य अध्ययन (विश्व एवं भारत)

SIERRA INNOVATIONS

RPSC 2ND GRADE – 2022

सामान्य अध्ययन (भारत एवं विश्व)

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	विश्व के महाद्वीप	1
2.	विश्व के महासागर	19
3.	विश्व की पवन प्रणाली	31
4.	भारतीय भूगोल (विस्तार एवं स्थिति)	38
5.	भारत के भौगोलिक भू-भाग	43
6.	भारतीय मानसून तंत्र	72
7.	भारत का अपवाह तंत्र	81
8.	भारत की प्रमुख झीलें	96
9.	भारतीय कृषि	100
10.	भारत की प्राकृतिक वनस्पति	107
11.	भारत वन स्थिति रिपोर्ट- (2021 (ISFR 2021)	111
12.	ऊर्जा संसाधन	114
13.	भारत के उद्योग	124
14.	विश्व एवं भारत की जनगणना	129
15.	सामाजिक सुरक्षा से संबंधित योजनाएँ	138
16.	भारत की विदेश नीति एवं नेहरू का योगदान	146
17.	भारत की विदेश नीति का विकास	154
18.	संवैधानिक विकास की पृष्ठभूमि	157
19.	भीमराव अंबेडकर एवं भारतीय संविधान का निर्माण एवं विशेषताएँ	164
20.	भारत में संघीय व्यवस्था	170
21.	संविधान के मूल अधिकार, नीति निदेशक तत्व एवं मूल कर्त्तव्य	176
22.	भारत का राष्ट्रपति (भाग 5-संघ)	180

23.	भारत का उपराष्ट्रपति	189
24.	भारत का प्रधानमंत्री एवं उसकी शक्तियाँ	193
25.	संविधान संशोधन	196
26.	राजनीतिक दल एवं उसकी भूमिका	203
27.	संयुक्त राष्ट्र संघ एवं भारत का योगदान	207
28.	भूमण्डलीकरण	217
29.	दबाव समूह (Pressure Group)	219
30.	भारत का विदेशी व्यापार	223

भारत की प्राकृतिक वनस्पति

प्राकृतिक वनस्पति का अर्थ है कि वनस्पति का वह भाग जो कि मनुष्य की सहायता के बिना अपने आप पैदा होता है और लम्बे समय तक उस पर मानवीय प्रभाव नहीं पड़ता हो उसे अक्षत वनस्पति कहते है।

वनों के प्रकार–

1. उष्ण कटिबंधीय सदाबहार एवं अर्द्ध सदाबहार वन
2. मानसूनी वन / पर्णपाती वन
3. उष्णकटिबंधीय शुष्क एवं काँटेदार वन
4. पर्वतीय वन
5. मैंग्रोव वन/अनूप वन/बेलांचली वन

1. उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन

- **औसत वर्षा** – 200 सेमी. से अधिक
- **तापमान** – 22° सेल्सियस से अधिक
- **विस्तार** – पश्चिमी घाट का पूर्वी भाग, कोरोमण्डल तट, उत्तरी–पूर्वी राज्यों का क्षेत्र अरूणाचल प्रदेश को छोड़कर अण्डमान एवं निकोबार व लक्ष्यद्वीप।
- **प्रमुख वृक्ष** – एबोनी, महोगनी, रोजवुड, ऐनी, सिंकोना, रबड़, ग्रीनवुड आदि।
- **अर्द्धसदाबहार वन** – साइडर, होक, कैल आदि।

प्रमुख विशेषताएँ

- पूरे वर्ष भर हरे–भरे बने रहते हैं क्योंकि यहाँ सर्वाधिक वृक्षों की प्रजातियाँ पाई जाती हैं।
- सघन वन है । कठोर वन है।
- ये वन आर्थिक दृष्टि से कम उपयोगी है।
- सर्वाधिक जैव विविधता का क्षेत्र व सर्वाधिक वृक्षों की विविधता है।
- पारिस्थितिकी/पर्यावरण सन्तुलन की दृष्टि से अधिक उपयोगी है।

2. उष्ण कटिबंधीय मानसूनी वन/पर्णपाती वन

भारत के सर्वाधिक भू–भाग पर पाये जाते है।
औसत वर्षा – 70 से 200 सेमी.

इन वनों के दो उप प्रकार है –

- अर्द्ध शुष्क पर्णपाती वन
- शुष्क पर्णपाती वन

अर्द्ध शुष्क पर्णपाती वृक्ष – साल, सांगवान, चन्दन, शीशम, पीपल, आम, महुआ आदि।
शुष्क पर्णपाती वृक्ष – अमलतास, अक्सलकुड़, पलास, खैर आदि।

प्रमुख विशेषताएँ

- आर्थिक दृष्टि से उपयोगी वन है।
- चरागाह व कच्चा माल मिलना।
- देश के सर्वाधिक महत्व वाले वन।

- वृत्त कम लम्बे व खुले होते है।
- इनका उपयोग रेल्वे स्लिपर, जलयान, फर्नीचर एवं कृषि उपक्रम बनाने में किया जाता है।

3. उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन

औसत वर्षा – 50 सेमी. से कम

विस्तार – दक्षिणी पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी राजस्थान, उत्तरी गुजरात में
दक्षिणी भारत में दक्षिण के पठार का आंतरिक भाग, पश्चिमी घाट का वृष्टिछाया प्रदेश।

प्रमुख वृक्ष – खजूर, खेजड़ी, अकेशिया, कैक्टाई, बबूल, रेहिड़ा, बेर आदि।

प्रमुख विशेषताएँ

- पत्तियों की अपेक्षा यहाँ के वृक्षों में काँटो का अधिक विकास हुआ है।
- पत्तियों की ऊपरी सतह लोमी/चिकनी होती है जबकि निचली सतह खुरदरी होती है जिसमें वाष्पीकरण कम होता है।
- वृक्षों की जड़े लम्बी व गहराई तक होती हैं।

4. पर्वतीय वन

पर्वतीय भागों में 150° मीटर से अधिक ऊँचाई पर मिलते है।

विस्तार

- दक्षिणी भारत में नील गिरि, अन्नामलाई व पलीनी की पहाड़ियों में 1500 मी. से अधिक ऊँचाई पर मिलते हैं। इन वनों को **'शोलास'** वन कहा जाता है।

उत्तरी भारत – हिमालय पर्वतीय भाग – जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सिक्किम, अरूणाचल प्रदेश ।

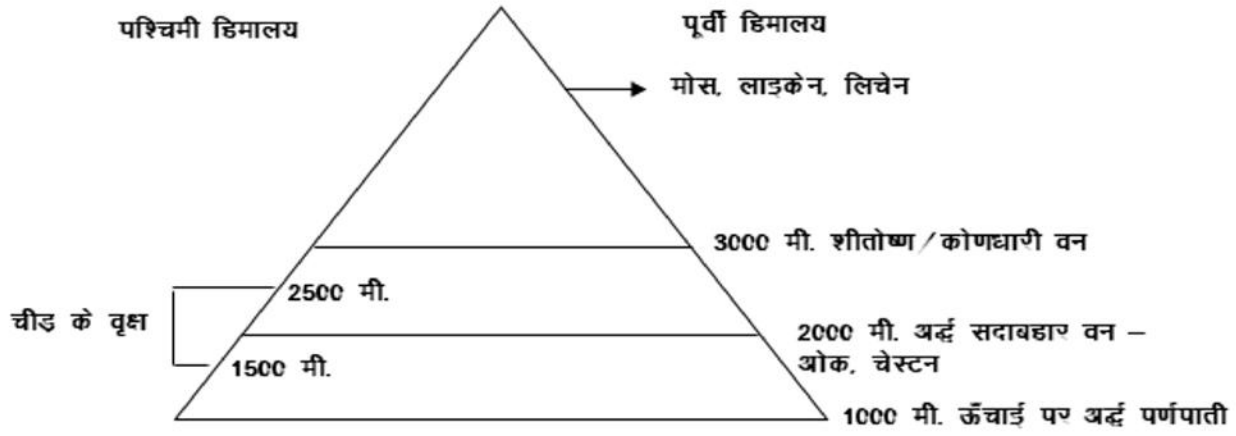

शीतोष्ण/कोणधारी वृक्ष

देवदार, एल्पाइन, बर्च, स्प्रूस, सिडार, वालन, चिनार, पाइन, सिल्वर, फर, जूनीयर, आदि।

5. मैंग्रोव वन/अनूप वन

इन वनों को सुन्दरी वन, ज्वारीय वन, दलदल वन, डेल्टाई वन भी कहा जाता है।

विस्तार

सुन्दरवन डेल्टा (गंगा, ब्रह्मपुत्र) – पश्चिमी बंगाल।
महानदी (उड़ीसा), गोदावरी, कृष्णा नदी (आन्ध्र प्रदेश), कावेरी (तमिलनाडु), नदियों के डेल्टाई भाग, गुजरात का तटीय भाग, अण्डमान–निकोबार का तटीय भाग आदि।

प्रमुख वृक्ष – गोरने, ताड़, कैसूरिना, नारियल, फोनिक्स, सुन्दरी, मैंग्रोव आदि।

प्रमुख विशेषताएँ

- समुद्रीय जल की लवणता को सहन कर सकते है।
- दलदली क्षेत्र के सदाबहार वन कहलाते है।
- लकड़ी कठोर होती है इसलिए सीमित उपयोग होता है।

भारतीय वन स्थिति रिपोर्ट – 2019

1. वर्ष 1987 से भारतीय वन स्थिति को द्विवार्षिक रूप से भारतीय वन सर्वेक्षण (देहरादून) द्वारा प्रकाशित किया जाता है।
2. यह इस श्रेणी की 16 वीं रिपोर्ट है।
3. इस रिपोर्ट में वन संसाधनों के आंकलन के लिए भारतीय दूर संवेदी उपग्रह रिसोर्स सेट–2 से प्राप्त आँकडों का प्रयोग किया जाता है।

ISPR, 2019 से संबंधित प्रमुख तथ्य

देश में वनों एवं वृक्षों से आच्छादित कुल क्षेत्रफल	24.56 %
कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का वनावरण क्षेत्र	21.67 %
कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का वृक्षावरण क्षेत्र	2.89 %
वनाच्छादित क्षेत्रफल में वृद्धि	0.56 %
वृक्षों से आच्छादित क्षेत्रफल में वृद्धि	1.29 %
कुल वृद्धि	0.65 %

सर्वाधिक वन क्षेत्रफल वाले राज्य

1.	मध्यप्रदेश	77,482 वर्ग किमी.
2.	अरूणाचल प्रदेश	66,688 वर्ग किमी.
3.	छत्तीसगढ़	55,611 वर्ग किमी.
4.	ओडिशा	51,619 वर्ग किमी.
5.	महाराष्ट्र	50,778 वर्ग किमी.

सर्वाधिक वनावरण प्रतिशत वाले राज्य

1.	मिजोरम	85.41 %
2.	अरूणाचल प्रदेश	79.63 %
3.	मेघालय	76.33 %
4.	मणिपुर	75.46 %
5.	नागालैण्ड	75.31 %

वन क्षेत्रफल में सर्वाधिक वृद्धि वाले राज्य

कर्नाटक	1025 वर्ग किमी.
आंध्र प्रदेश	990 वर्ग किमी.
केरल	823 वर्ग किमी.
जम्मू–कश्मीर	371 वर्ग किमी.
हिमाचल प्रदेश	334 वर्ग किमी.

भारत में इस समय जैव विविधता हॉट स्पॉट 4 है –

1. पश्चिमी घाट
2. पूर्वी हिमालय
3. इण्डो बर्मा क्षेत्र
4. सुण्डा क्षेत्र

- जैव संरक्षित मण्डल – 18
- राष्ट्रीय पार्क – 1013
- वन्य जीव अभयारण्य – 513
- टाइगर रिजर्व – 50

आर्द्र भूमि

आर्द्रभूमि वो भूमि होती है जो वर्ष के कुछ महीनें जल से ढकी होती है।

आर्द्रभूमि के संरक्षण हेतु वर्ष 1971 में ईरान के एक शहर **रामसर** में सम्मेलन हुआ।

भारत में 2021 में भारत के 4 नये आर्द्रभूमि स्थल

1. भिंडावास वन्य जीव अभयारण्य – हरियाणा
   यह मानव निर्मित मीठे पानी की आर्द्रभूमि है।
2. सुल्तानपुर राष्ट्रीय उद्यान – हरियाणा
3. थोल झील वन्यजीव अभयारण्य – गुजरात
4. वाधवाना आर्द्रभूमि – गुजरात

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण आर्द्रभूमि

- केवलादेव/ घना पक्षी विहार, सांभर झील – राजस्थान
- चिल्का झील – ओड़िसा
- सुन्दरवन डेल्टा – हिमाचल प्रदेश
- चन्द्रताल – हिमाचल प्रदेश
- बेम्बनाद – केरल

ऊर्जा संसाधन

ऊर्जा संसाधन (1) कोयला (2) पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस (3) यूरेनियम

ऊर्जा संसाधन

परम्परागत	अपरम्परागत
1. कोयला	पवन ऊर्जा
2. पेट्रोलियम	सौर ऊर्जा
3. प्राकृतिक गैस	परमाणु ऊर्जा
4. तापीय ऊर्जा	ज्वारीय ऊर्जा
5. जल ऊर्जा	बायोगैस ऊर्जा

1. कोयला

- **भारत का सबसे प्रमुख ऊर्जा स्रोत कोयला है तथा भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों का लगभग 67: भाग कोयले से पूरा करता है ।**

- भारत में 'छोटा नागपुर पठार' क्षेत्र कोयले के भण्डारों के लिए विख्यात है तथा यहाँ मिलने वाला कोयला 'गोंडवाना कोयला' कहलाता है क्योंकि इस कोयले का निर्माण 'कार्बोनिफेरस काल' के दौरान हुआ तथा उस समय भारतीय प्रायद्वीप 'गोंडवाना लैण्ड' का भाग हुआ करता था ।
- भारत में मुख्य रूप से 'बिटुमिनस' प्रकार का कोयला मिलता है ।
- 'छोटा नागपुर पठार' क्षेत्र में 'दामोदर नदी घाटी' कोयले के भण्डारों के लिए विख्यात है तथा इसे 'भारत की रूर घाटी' भी कहते है ।
- झारखण्ड में देश के कुल कोयले के भंडार का 26ण्16: भाग पाया जाता है तथा यह कोयले के भंडार या उत्पादन दोनों में प्रथम स्थान है ।

कोयले भण्डार वाले कुछ प्रमुख क्षेत्र

1. झारखंड़ = झरियाँ (झारखण्ड़ में सबसे बड़ी खान व भारत की दूसरी सबसे बड़ी खान), बोकारो, धनबाद, गिरडी, दल्तेनगंज आदि
2. पश्चिम बंगाल = रानीगंज (भारत की सबसे बड़ी कोयले की खान)
3. छत्तीसगढ़ = कोरबा, झिलमिली, चिलीमिली आदि
4. ओडिशा = तल्चर (ब्स् सबसे पहले उर्वरकों का निर्माण 'ाुरू करेगी)
5. मध्यप्रदेश = सिंगरोली, सोहागपुर
6. आन्ध्रप्रदेश = सिंगरेनी
7. तमिलनाडु = सलेम, नेवेली – भारत में सबसे बड़े लिग्नाइट भंडार
8. जम्मू–कश्मीर = कालाकोट (यहाँ 'अर्द्ध एन्थ्रेसाइट' प्रकार का कोयला मिलता है तथा यह टर्शयरी **(Tertiary Age)** काल का कोयला है जो भारत में एकमात्र है ।)

क्र. सं.	कोयले के प्रकार	कार्बन की मात्रा
1.	एन्थ्रेसाइट (श्रे"ठ)	80.90:
2.	बिटुमिन्स (वाणिज्यि इस्तेमाल के लिए)	60.80:
3.	लिग्नाइट	40.60:
4.	पीट	40 से कम

1. पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस

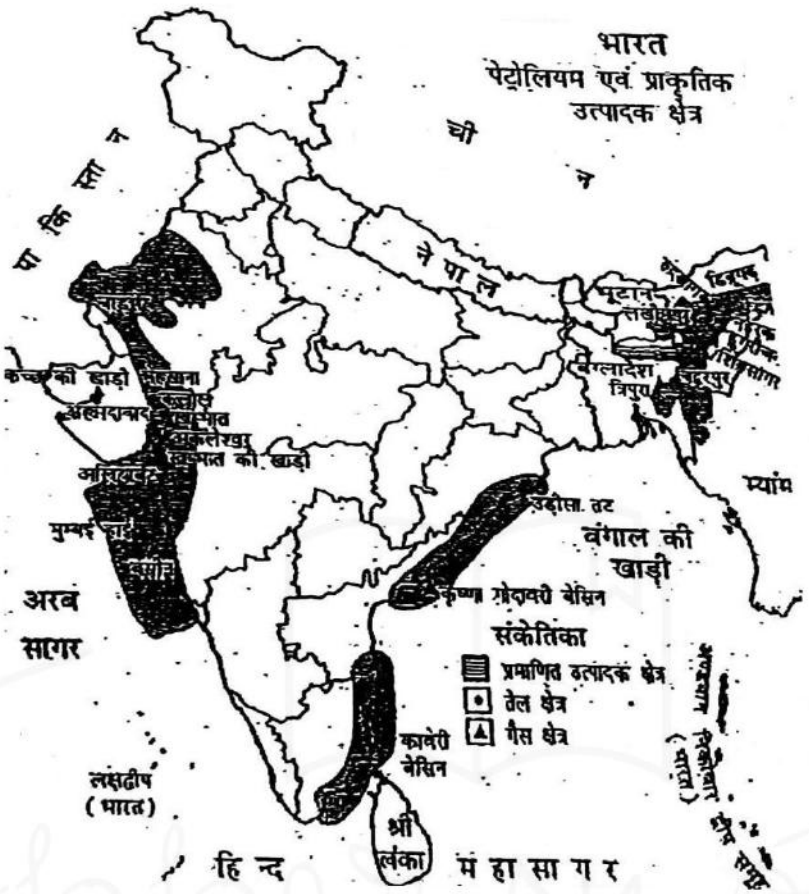

पेट्रोलियम	
On shore Deposits	**Off Shore Deposits**
1. गुजरात • अंकलेश्वर • कालोल • मेहसाना • बालोल • कोशाम्बी 2. असम ब्रह्मपुत्र नदी बेसिन– 1. डिग्बोई (भारत में प्रथम) 2. नुमालीगढ़	• बोम्बे हाई (भारत में सर्वाधिक) • बसीन • अलिया बेत (खम्भात की खाड़ी) • कृ"णा गोदावरी बेसिन • कावेरी बेसिन (तमिलनाडु) • रावा (आन्ध्रप्रदेश)

3. नाहरकाटिया 4. मोरान– हुगरीजन 5. सुरमा घाटी **3. राजस्थान** जैसलमेर बेसिन प्राकृतिक गैस के भण्डारों के लिए विख्यात क्षेत्र– तनोट, घोटारू **(Hilium Mixed Natural Gas)** बाड़मेर–सांचौर बेसिन क्षेत्र– मंगला, ऐश्वर्या, वागेश्वरी, रामेश्वरी, सरस्वती, भाग्यम्	

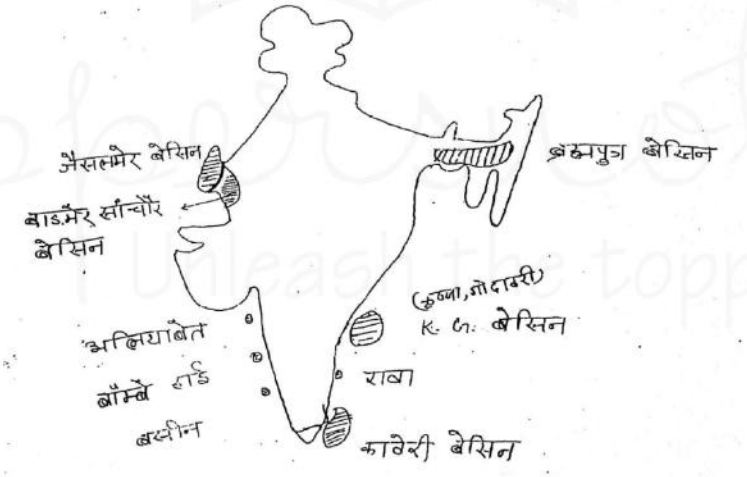

1. यूरेनियम

- थोरियम – केरल के तटीय क्षेत्रों में मिलने वाली 'मोनाजाइट मिट्टी' में थोरियम के भण्डार पाये जाते है ।
- विश्व के कुल थोरियम भण्डारों का 30: भाग भारत में मिलता है ।
- यूरेनियम –

U^{238}	U^{295}
99.7%	0.3%

यूरेनियम का 2 भाग भारत में पाया जाता है ।

यूरेनियम भंडार वाले प्रमुख क्षेत्र

(i). झारखण्ड :– सिंहभूम जिला– जादूगुड़ा, नरवा पहाड़, भातिन, तुरामंडी

(ii). आन्ध्रप्रदेश – 'ांकरा खान (नेल्लोर जिला), तुम्मालापल्ली/**YSR** जिला (भारत में सबसे अधिक यूरेनियम के भंडार)

(iii). राजस्थान – उदयपुर

(iv). मेघालय – मेघालय पठार क्षेत्र (देमियासियार – जहाँ **Mining** होती है ।)

1. बिटुमिनस कोयला

नवीनीकरणीय ऊर्जा का भारत में 2022 तक लक्ष्य – 175 GW

5 GW Small hydro power

10 GW Bio Power

60 GW Wind Power

100 GW Solder Power

खनिज संसाधन

लोहा (Iron)

प्रकार

(i). मैग्नेटाइट – **60 – 65: Iron**

(ii). हेमेटाइट – **60 – 70: Iron**(लगभग)

(iii). लिमोनाइट – **40 – 50: Iron** (लगभग)

(iv). सीडेराइट – **10 – 40:** (लगभग)

काला अयस्क (लोहे का ऑक्साइड)

1. लौहा

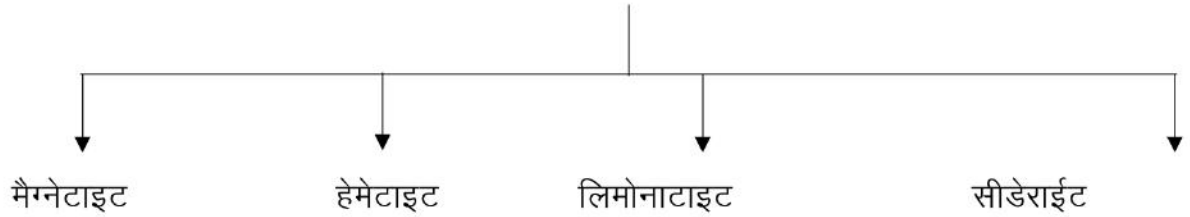

- भारत में धरवाड़ क्रम की चट्टानों से लौह अयस्क पाया जाता है ।
- भारत में हेमेटाइट के भण्डार सर्वाधिक पाये जाते हैं ।

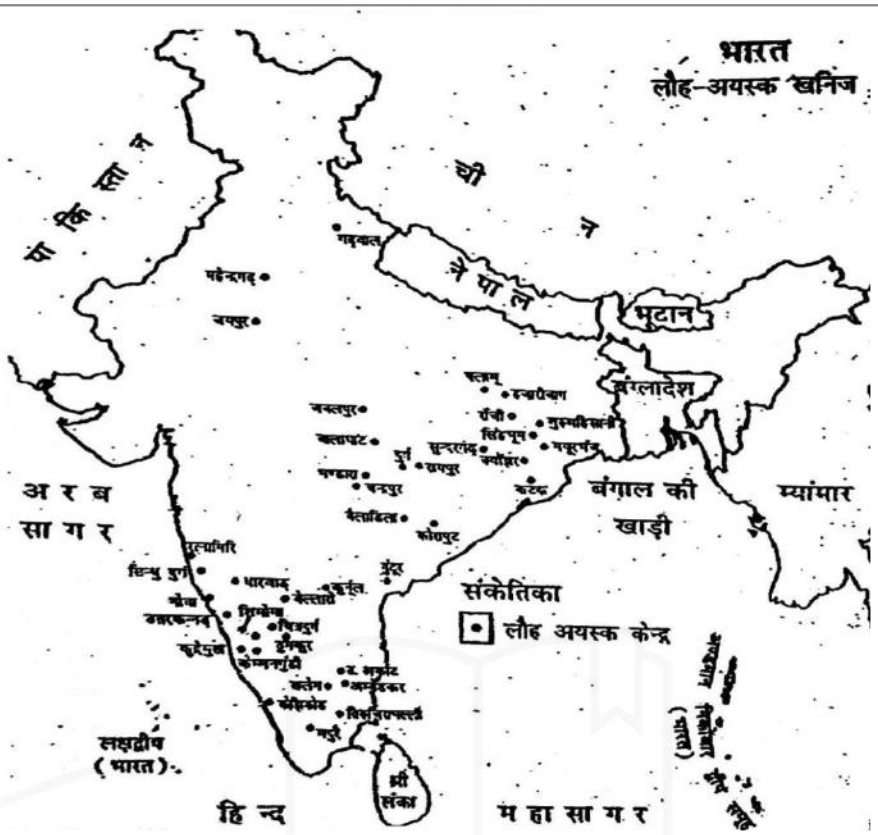

लोहा के भंडार के प्रमुख क्षेत्र

(i). झारखण्ड – सिंहभूम जिला (नोवामंडी, गुआ, नोटोबुरा)

(ii). ओडिशा – मयूरगंज जिला (गुरूमही"ाणी, बादामपहाड़), सुन्दरगढ़ जिला (बोनाई पहाड़, बाराजमंदा)

(iii). छत्तीसगढ़ – दल्ली राजहरा (दुर्ग जिला), बेलाडिला जिला (बस्तर जिला)

(iv). कर्नाटक –

- बाबा बूदन पहाडियाँ (कॉफी के लिए प्रसिद्ध)
- कुद्रेमुख चोटी (मैंगलोर बंदरगाह से इरान को निर्यात)
- केमानगुड़ी VISCO (विश्वेश्वर्य आयरन एंड स्टील कम्पनी)
- सेन्ड्यूर **Range** (होसपेट व बेलारी जिला)

(v). तमिलनाडु – सलेम

(vi). राजस्थान – मोरीजा (जयपुर, राजस्थान)

(vii). गेवा

दबाव समूह (Pressure Group)

परिचय

- एक दबाव समूह उन लोगों का एक समूह है जो अपने सामान्य हितों को बढ़ावा देने और बचाव के लिए सक्रिय रूप से संगठित होते हैं। इसे ऐसा इसलिए कहा जाता है, क्योंकि यह सरकार पर दबाव डालकर सार्वजनिक नीति में बदलाव लाने का प्रयास करता है। यह सरकार और उसके सदस्यों के बीच एक संपर्क के रूप में कार्य करता है।
- दबाव समूहों को हित समूह या निहित समूह भी कहा जाता है। वे राजनीतिक दलों से अलग हैं, क्योंकि वे न तो चुनाव लड़ते हैं और न ही राजनीतिक सत्ता पर कब्जा करने की कोशिश करते हैं। वे विशिष्ट कार्यक्रमों और मुद्दों से संबंधित हैं और उनकी गतिविधियाँ सरकार को प्रभावित करके अपने सदस्यों के हितों की सुरक्षा और संवर्धन तक ही सीमित हैं।
- दबाव समूह कानूनी और वैध तरीकों जैसे लॉबिंग, पत्राचार, प्रचार, प्रचार, याचिका, सार्वजनिक बहस, अपने विधायकों के साथ संपर्क बनाए रखने आदि के माध्यम से सरकार में नीति–निर्माण और नीति कार्यान्वयन को प्रभावित करते हैं।

दबाव समूहों द्वारा उपयोग की जाने वाली तकनीक

- दबाव समूह अपने उद्देश्यों को हासिल करने के लिए तीन अलग–अलग तकनीकों का सहारा लेते हैं।
  चुनाव प्रचार – सार्वजनिक कार्यालय में ऐसे व्यक्तियों को रखना जो संबंधित दबाव समूह द्वारा प्रचारित हितों के अनुकूल हों।
  पैरवी करना – सार्वजनिक अधिकारियों को, चाहे वे शुरू में उनके प्रति अनुकूल हों या नहीं, उन नीतियों को अपनाने और लागू करने के लिए जो उन्हें लगता है कि उनके हितों के लिए सबसे अधिक फायदेमंद साबित होंगी।
  प्रचार–प्रसार – जनता की राय को प्रभावित करना और इस तरह सरकार पर अप्रत्यक्ष प्रभाव प्राप्त करना, क्योंकि लोकतंत्र में सरकार जनता की राय से काफी हद तक प्रभावित होती है।

दबाव समूहों के लक्षण

- **कुछ हितों के आधार पर** – प्रत्येक दबाव समूह कुछ हितों को ध्यान में रखते हुए खुद को संगठित करता है और इस प्रकार राजनीतिक व्यवस्था में सत्ता की संरचना को अपनाने का प्रयास करता है।
- **आधुनिक और पारंपरिक साधनों का उपयोग** – वे राजनीतिक दलों के वित्तपोषण, चुनाव के समय अपने करीबी उम्मीदवारों को प्रायोजित करने और नौकरशाही को भी संतुष्ट रखने जैसी तकनीकों को अपनाते हैं। उनके पारंपरिक साधनों में उनके हितों को बढ़ावा देने के लिए जाति, पंथ और धार्मिक भावनाओं का शोषण शामिल है।
- संसाधनों पर बढ़ते दबाव और मांगों के परिणामस्वरूप समाज के विभिन्न और प्रतिस्पर्धी वर्गों के संसाधनों पर संसाधनों, दावों और प्रतिदावों की कमी दबाव समूहों के उदय की ओर ले जाती है।
- **राजनीतिक दलों की अपर्याप्तता** – दबाव समूह मुख्य रूप से राजनीतिक दलों की अपर्याप्तता का परिणाम होते हैं।
- **बदलती चेतना का प्रतिनिधित्व करें** – उदाहरण के लिए खाद्य उत्पादन या औद्योगिक वस्तुओं में वृद्धि से व्यक्तियों और समूहों के दुनिया को देखने के तरीके में बदलाव आता है। उत्पादन में ठहराव भाग्यवाद की ओर ले जाता है लेकिन उत्पादन में वृद्धि से मांग, विरोध और नए दबाव समूहों का गठन होता है।

दबाव समूहों के प्रकार

- **संस्थागत हित समूह** – ये समूह औपचारिक रूप से संगठित होते हैं जिनमें पेशेवर रूप से नियोजित व्यक्ति शामिल होते हैं। वे सरकारी तंत्र का हिस्सा हैं और अपना प्रभाव डालने की कोशिश करते हैं। इन समूहों में राजनीतिक दल, विधायिका, सेना, नौकरशाही आदि शामिल हैं। जब भी ऐसा कोई संघ विरोध करता है तो वह संवैधानिक तरीकों से और नियमों और विनियमों के अनुसार ऐसा करता है।

उदाहरण – आईएएस एसोसिएशन, आईपीएस एसोसिएशन, राज्य सिविल सेवा संघ, आदि।

- **साहचर्य हित समूह** – ये संगठित विशेषीकृत समूह होते हैं जो रुचि व्यक्त करने के लिए बनाए जाते हैं, लेकिन सीमित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए। इनमें ट्रेड यूनियन, व्यवसायियों और उद्योगपतियों के संगठन और नागरिक समूह शामिल हैं।
  भारत में एसोसिएशनल इंटरेस्ट ग्रुप के कुछ उदाहरण हैं बंगाल चौंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री, इंडियन चौंबर ऑफ कॉमर्स, ट्रेड यूनियन जैसे AITUC (ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस), टीचर्स एसोसिएशन, स्टूडेंट्स एसोसिएशन जैसे नेशनल स्टूडेंट्स यूनियन ऑफ इंडिया (NSUI) आदि।
- **एनॉमिक इंटरेस्ट ग्रुप्स** – एनॉमिक प्रेशर ग्रुप्स से हमारा मतलब कमोबेश दंगों, प्रदर्शनों, हत्याओं आदि जैसे समाज से राजनीतिक व्यवस्था में एक सहज सफलता से हैं।
- **गैर–सहयोगी हित समूह** – ये रिश्तेदारी और वंश समूह और जातीय, क्षेत्रीय, स्थिति और वर्ग समूह हैं जो व्यक्तियों, परिवार और धार्मिक प्रमुखों के आधार पर हितों को स्पष्ट करते हैं। इन समूहों की अनौपचारिक संरचना होती है। इनमें जाति समूह, भाषा समूह आदि शामिल हैं।

भारत में दबाव समूह

- **व्यापार समूह** – फेडरेशन ऑफ इंडियन चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की), एसोसिएटेड चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री ऑफ इंडिया (एसोचैम), फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया फूडग्रेन डीलर्स एसोसिएशन (एफएआईएफडीए), आदि
- **ट्रेड यूनियन** – अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (एआईटीयूसी), इंडियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस (इंटक), हिंद मजदूर सभा (एचएमएस), भारतीय मजदूर संघ (बीएमएस)
- **व्यावसायिक समूह** – इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (IMA), बार काउंसिल ऑफ इंडिया (BCI), ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ यूनिवर्सिटी एंड कॉलेज टीचर्स (AIFUCT)
- **कृषि समूह** – अखिल भारतीय किसान सभा, भारतीय किसान संघ, आदि
- **छात्र संगठन** – अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (ABVP), अखिल भारतीय छात्र संघ (AISF), भारतीय राष्ट्रीय छात्र संघ (NSUI)
- **धार्मिक समूह** – राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस), विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी), जमात–ए–इस्लामी, आदि।
- **जाति समूह** – हरिजन सेवक संघ, नादर जाति संघ, आदि
- **भाषाई समूह** – तमिल संघ, आंध्र महासभा, आदि
- **जनजातीय समूह** – नैशनल सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ़ नागालैंड (NSCN), ट्राइबल नेशनल वालंटियर्स (TNU), त्रिपुरा में, यूनाइटेड मिज़ो फ़ेडरल ऑर्ग, ट्राइबल लीग ऑफ़ असम, आदि।
- **विचारधारा आधारित समूह** – नर्मदा बचाओ आंदोलन, चिपको आंदोलन, महिला अधिकार संगठन, भ्रष्टाचार के खिलाफ भारत आदि।
- **परमाणु समूह** – नक्सली समूह, जम्मू और कश्मीर लिबरेशन फ्रंट (JKLF), यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम (ULFA), दल खालसा, आदि।

दबाव समूहों के कार्य, भूमिका और महत्व

- **रुचियों की अभिव्यक्ति** – दबाव समूह लोगों की मांगों और जरूरतों को निर्णय लेने वालों के ध्यान में लाते हैं। वह प्रक्रिया जिसके द्वारा लोगों के दावों को ठोस और स्पष्ट किया जाता है, रुचि अभिव्यक्ति कहलाती है।
- **राजनीतिक समाजीकरण के एजेंट** – दबाव समूह राजनीतिक समाजीकरण के एजेंट होते हैं, जहाँ तक वे राजनीतिक प्रक्रिया के प्रति लोगों के उन्मुखीकरण को प्रभावित करते हैं। ये समूह लोगों और सरकार के बीच दोतरफा संचार लिंक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

- दबाव समूह विधायी प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, न केवल हितों की अभिव्यक्ति के महत्वपूर्ण ढांचे के रूप में, बल्कि सरकार के कानूनों और नीतियों में वांछित कानूनों या संशोधनों को हासिल करने के लिए विधायकों के साथ पैरवी करने वाली सक्रिय एजेंसियों के रूप में भी।
- विभिन्न राजनीतिक दलों के चुनाव घोषणापत्र तैयार करने से लेकर विधायकों द्वारा कानून पारित करने तक, दबाव समूह नियम बनाने की प्रक्रिया से जुड़े रहते हैं।
- **दबाव समूह और प्रशासन** – दबाव समूह प्रशासन की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं। नौकरशाही के साथ पैरवी करके, दबाव समूह आमतौर पर नीति कार्यान्वयन की प्रक्रिया को प्रभावित करने की स्थिति में होते हैं।
- **न्यायिक प्रशासन में भूमिका** – दबाव समूह अपने हितों की रक्षा और सुरक्षा के लिए न्यायिक प्रणाली का उपयोग करने का प्रयास करते हैं। हित समूह अक्सर सरकार के खिलाफ अपनी शिकायतों के निवारण के साथ–साथ किसी विशेष निर्णय या नीति को असंवैधानिक घोषित करने के लिए अदालत तक पहुंच की मांग करते हैं।
- दबाव समूह जनमत के निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाते हैं। प्रत्येक दबाव समूह ऐसे सभी कानूनों, नियमों, निर्णयों और नीतियों का मूल्यांकन करने में निरंतर लगा रहता है जिनका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उनके द्वारा प्रतिनिधित्व किए जाने वाले हितों पर प्रभाव पड़ता है। यह न केवल अपने सदस्यों के सामने बल्कि आम जनता के सामने भी लोकप्रिय समर्थन प्राप्त करने के साथ–साथ सरकार का ध्यान आकर्षित करने के लिए पेशेवरों और विपक्षों को हमेशा रखता है।
- वे सूचना अभियान चलाकर, बैठकें आयोजित करके, याचिका दायर करके आदि अपने लक्ष्यों और अपनी गतिविधियों के लिए जनता का समर्थन और सहानुभूति हासिल करने का प्रयास करते हैं। इनमें से अधिकांश समूह इन मुद्दों पर ध्यान देने के लिए मीडिया को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं।
- दबाव समूह सरकार की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करते हैं। मुक्त समाज में निर्णय लेने के लिए प्रभावित समूहों के साथ परामर्श तर्कसंगत तरीका है। यह निर्णय लेने की प्रक्रिया की गुणवत्ता को बढ़ाकर सरकार को और अधिक कुशल बनाता है – इन समूहों द्वारा प्रदान की गई जानकारी और सलाह सरकारी नीति और कानून की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करती है।
- उदार लोकतंत्र के प्रभावी कामकाज के लिए स्वतंत्र रूप से संचालित दबाव समूह आवश्यक हैं।
- वे सरकार और समाज के बीच एक महत्वपूर्ण मध्यस्थ संस्थान के रूप में कार्य करते हैं।
- वे राजनीतिक सत्ता के फैलाव में सहायता करते हैं।
- वे शक्ति की एकाग्रता को संतुलित करने के लिए महत्वपूर्ण काउंटरवेट प्रदान करते हैं।
- दबाव समूह नई चिंताओं और मुद्दों को राजनीतिक एजेंडे तक पहुंचने में सक्षम बनाते हैं, जिससे सामाजिक प्रगति को सुविधाजनक बनाने और सामाजिक ठहराव को रोकने में मदद मिलती है। उदाहरण के लिए, महिला और पर्यावरणवादी आंदोलन।
- दबाव समूह व्यक्तिगत और सामूहिक शिकायतों और मांगों के लिए 'सुरक्षा–वाल्व' आउटलेट प्रदान करके सामाजिक सामंजस्य और राजनीतिक स्थिरता को बढ़ाते हैं।
- दबाव समूह सरकार की खराब नीतियों और गलत कामों को उजागर करके विपक्षी राजनीतिक दलों के काम के पूरक हैं। दबाव समूह इस प्रकार निर्वाचक मंडलों के प्रति निर्णयकर्ताओं की जवाबदेही में सुधार करते हैं।
- दबाव समूह लोगों को शिक्षित करने, डेटा संकलित करने और नीति निर्माताओं को विशिष्ट जानकारी प्रदान करने में मदद करते हैं, इस प्रकार वे सूचना के अनौपचारिक स्रोत के रूप में काम करते हैं। राजनीति में कई समूहों की सक्रिय रचनात्मक भागीदारी व्यक्तिगत समूह हितों के साथ सामान्य हितों को समेटने में मदद करती है।

भारत का विदेशी व्यापार

(INDIA'S FOREIGN TRADE)

भूमिका (Introduction)

विदेशी व्यापार वह व्यापार है जो एक देश तथा दूसरे देश के बीच होता है। एक देश से दूसरे देश को भेजी जाने वाली वस्तुओं को निर्यात (Export) कहा जाता है। उदाहरण के लिये, भारत इंग्लैण्ड को चाय तथा जूट के सामान का निर्यात करता है। एक देश दूसरे देश से जो सामान मंगवाता है, उसे आयात (Import) कहा जाता है। किसी देश में एक वर्ष में होने वाले वस्तुओं के आयातों तथा निर्यातों के अन्तर को व्यापार सन्तुलन (Balance of Trade) कहा जाता है। इसके विपरीत एक वर्ष में सभी प्रकार की वस्तुओं, सेवाओं तथा पूंजी के आयात और निर्यात के अन्तर को भुगतान सन्तुलन (Balance of Payments) कहा जाता है। वास्तव में व्यापार सन्तुलन भुगतान सन्तुलन का ही एक हिस्सा होता है। यदि किसी देश का निर्यात आयात से अधिक है तो व्यापार सन्तुलन अनुकूल (Favourable Balance of Payments) होता है। इसके विपरीत यदि निर्यात आयातों से कम होते हैं तो व्यापार सन्तुलन प्रतिकूल (Unfavourable) होता है।

प्रतिकूल व्यापार सन्तुलन के कारण विदेशी विनिमय या विदेशी मुद्रा कोष में कमी आती है तथा अनुकूल व्यापार सन्तुलन के कारण विदेशी विनिमय के कोष में वृद्धि होती है। जब विदेशी व्यापार के प्रतिकूल होने के कारण विदेशी देनदारी बढ़ जाती है तो इसका भुगतान विदेशों से उधार लेकर या देश के सोने के भण्डारों या पहले से बचाई गई विदेशी मुद्रा द्वारा किया जाता है।

1. विदेशी व्यापार का महत्त्व (Importance of Foreign Trade)

प्रत्येक देश की अर्थव्यवस्था में विदेशी व्यापार का महत्वपूर्ण स्थान होता है। रोबर्टसन (Robertson) के अनुसार, "विदेशी व्यापार आर्थिक विकास का इंजन है।" भारतीय अर्थव्यवस्था में विदेशी व्यापार का महत्व निम्नलिखित है :

(i) प्राकृतिक साधनों का पूर्ण उपयोग (Full Utilisation of Natural Resources):- एक देश ऐसे उद्योगों की स्थापना एवं संचालन करता है जिनसे उसे अधिकतम तुलनात्मक लाभ प्राप्त होता है और उस बाजार में अपनी उत्पादित वस्तुओं को बेचता है जहां उसे वस्तु का सर्वाधिक मूल्य मिलता है। फलत: वह उपलब्ध प्राकृतिक साधनों का सर्वोत्तम उपभोग करता है।

(ii) औद्योगिकीकरण को प्रोत्साहन (Encouragement to Industrilisation):- विदेशी व्यापार के माध्यम से देश में उद्योग धन्धों को विकसित करने के लिए आवश्यक उपकरण, कच्चा माल व तकनीकी ज्ञान सरलता से उपलब्ध हो जाते हैं। फलत: देश में औद्योगिक विकास को प्रोत्साहन मिलता है।

(iii) अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एवं सद्भावना में वृद्धि (Improvement in International Cooperation and Harmony):- विदेशी व्यापार के फलस्वरूप विभिन्न देशों के नागरिक एक-दूसरे के निकट सम्पर्क में आते हैं और एक-दूसरे के विचारों एवं दृष्टिकोणों से परिचित होते हैं। इसके फलस्वरूप सांस्कृतिक सहयोग एवं परस्पर विश्वास में वृद्धि होती है।

(iv) सस्ती वस्तुओं की उपलब्धि (Availability of Cheaper Goods):- विदेशी व्यापार के फलस्वरूप हमें विदेशों से सस्ती एवं उत्तम वस्तुएं उपलब्ध होने लगती हैं। इन वस्तुओं के उपभोग से लोगों के जीवन-स्तर एवं आर्थिक कल्याण में वृद्धि होती है।

(v) **भौगोलिक श्रम विभाजन (Geographical Specialisation):-** विदेशी व्यापार के स्वतन्त्र होने पर प्रत्येक देश उन वस्तुओं का उत्पादन करता है जिनसे उसे सर्वाधिक प्राकृतिक लाभ प्राप्त होता है (अथवा लागत न्यूनतम होती है) इस प्रकार विदेशी व्यापार की क्रियाएँ भौगोलिक श्रम विभाजन को सम्भव बनाती है।

(vi) **उत्पादन क्षमता में सुधार (Improvement in Production Capacity):-** विदेशी व्यापार के कारण देश के उद्योगपतियों को सदैव प्रतियोगिता का भय रहता है। वे जानते हैं कि यदि वे उच्च कोटि का उत्पादन कम कीमत पर प्रस्तुत न कर सके तो उनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं की मांग कम हो जायेगी। अतः वे अपनी कार्य-कुशलता एवं उत्पादन तकनीक में सुधार करते रहते हैं।

(vii) **एकाधिकारी प्रवृत्ति पर रोक (Check on Monopoly Power):-** विदेशी प्रतियोगिता के कारण अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में एकाधिकारी प्रवृत्ति पर अंकुश लगा रहता है जिससे उपभोक्ता की एकाधिकारात्मक शोषण से रक्षा होती है।

(viii) **कच्चे माल की उपलब्धि (Availability of Raw-Materials):-** विदेशी व्यापार के कारण विभिन्न देशों को आवश्यक कच्चा माल सरलता से उपलब्ध हो जाता है जिससे देश के औद्योगिकीकरण को प्रोत्साहन मिलता है।

(ix) **कीमत-स्तर में समानता की प्रवृत्ति (Equality in Price Level):-** विदेशी व्यापार के कारण विश्व के प्रायः सभी देशों में वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमत समान होने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

(x) **विदेशी विनिमय की उपलब्धि (Availability of Foreign Exchange):-** विदेशी व्यापार विदेशी विनिमय को अर्जित करने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन है।

(xi) **राजस्व की प्राप्ति (Revenue to the Govt.):-** विदेशी व्यापार के कारण सरकार को भारी मात्रा में आयात व निर्यात कर लगाकर राजस्व की प्राप्ति होती है।

2. भारत की अर्थव्यवस्था के लिए आयातों तथा निर्यातों का महत्त्व (Importance of Imports and Exports for Indian Economy)

भारत की अर्थव्यवस्था के लिए आयातों तथा निर्यातों का निम्नलिखित महत्व है :

2.1 आयातों का महत्त्व Importance of Imports)

भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए आयातों का मुख्य महत्त्व निम्नलिखित है :

(i) **अनिवार्य उपभोक्ता वस्तुओं की कमी को पूरा करना (To Meet Shortage of Essential Consumer Goods):-** भारतीय अर्थव्यवस्था अपनी अनिवार्य उपभोक्ता वस्तुओं जैसे खाद्यान्न, खाने का तेल, चीनी आदि की कमी को आयातों द्वारा पूरा कर सकती है। उदाहरण के लिए 1994 में गन्ने का उत्पादन कम होने के कारण चीनी की बहुत कमी हो गई। चीनी की कमी को पूरा करने के लिए विदेशों से बड़ी मात्रा में चीनी का आयात किया गया।

(ii) **पूंजीगत वस्तुओं की आवश्यकता को पूरा करना (To Meet the Need of Capital Goods):-** भारत को अपने आर्थिक विकास के लिए कई प्रकार की पूंजीगत वस्तुओं जैसे मशीनरी, यन्त्रों आदि की आवश्यकता है। इनमें से कुछ पूंजीगत वस्तुओं का भारत में बिल्कुल भी उत्पादन नहीं किया जा सकता। अतएव इन पूंजीगत वस्तुओं अर्थात् मशीनों की आवश्यकता को आयातों द्वारा पूरा किया जाता है।

(iii) **महत्वपूर्ण आगतों की प्राप्ति करना (To Obtain Important Inputs):-** भारत को अपने उद्योगों तथा कृषि के विकास के लिए कई महत्वपूर्ण आगतों जैसे पैट्रोल,रासायनिक खाद,खनिजों आदि की

आवश्यकता होती है। इनका उत्पादन देश में पर्याप्त मात्रा में नहीं होने पाता अतएव इनकी कमी को आयातों द्वारा पूरा किया जाता है।

2.2 निर्यातों का महत्व (Importance of Exports)

भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए निर्यातों का मुख्य महत्व निम्नलिखित हैं :

(i) **अधिक उत्पादन का निर्यात (Export of Surplus Production):-** भारत में कई वस्तुओं जैसे - चाय, पटसन आदि का उत्पादन घरेलू आवश्यकता से अधिक होता है। इन वस्तुओं का विदेशों को निर्यात करके ही बड़े तथा लाभदायक पैमाने पर उत्पादन करना सम्भव होता है।

(ii) **विदेशी मुद्रा की प्राप्ति (To Obtain Foreign Exchange):-** भारत को अपने आयातों को प्राप्त करने के लिए विदेशी मुद्रा की आवश्यकता होती है। यह विदेशी मुद्रा निर्यातों के बदले में ही प्राप्त किया जा सकता है।

3. विदेशी व्यापार का परिणाम अर्थात् मात्रा (Volume of Foreign Trade)

स्वतन्त्रता से पहले भारत का विदेशी व्यापार बहुत अधिक नहीं था। सन् 1934 में भारत का कुल विदेशी व्यापार 186 करोड़ रूपये का था। परन्तु स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत के विदेशी व्यापार में बहुत अधिक वृद्धि हुई। सन् 1951 में भारत का विदेशी व्यापार 1,250 करोड़ रूपये था जोकि 2020-21 में बढ़कर 6,86,244 करोड़ रूपये का हो गया। इसमें 2,91,808 करोड़ रूपये के निर्यात और 3,94,436 करोड़ रूपये के आयात थे।

3.1 योजनाकाल में विदेशी व्यापार का परिमाण अर्थात् मात्रा (Volume of Foreign Trade during Plans)

आज विश्व के लगभग सभी देशों के साथ भारत के व्यापारिक सम्बन्ध है और निर्यात होने वाले या आयात किये जाने वाले सामान की सूची में लगभग हज़ारों वस्तुएं है। स्वतन्त्रता के पश्चात् पंचवर्षीय योजनाओं में भारत के विदेशी व्यापार का परिमाण निम्नलिखित तालिका से ज्ञात हो जाता

				परिवर्तन दर	
	निर्यात (करोड़ रूपये में)	आयात	व्यापार शेष	निर्यात	आयात
2020-21	291808	394436	–102627	–6.9	–16.9
2020-21 (अप्रैल-दिसम्बर)	201380	262760	–61380	–15.5	–27.9
2020-21 (अप्रैल-दिसम्बर)	301380	443820	–142440	49.7	68.9

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है:- (i) वर्ष 1950-51 में भारत का कुल आयात 650 करोड़ रूपये के थे, वह वर्ष 2011-12 में बढ़कर 1,683,467 करोड़ रूपये के हो गए। (ii) वर्ष 1950-51 में भारत का कुल निर्यात 600 करोड़ रूपये के थे वर्ष 2020-21 में बढ़कर 30,13,380 करोड़ रूपये के हो गये। कई निर्यात प्रोत्साहन योजनाओं के बावजूद भारत के निर्यात आयातों से कम हैं।

4. भारत के मुख्य आयात तथा निर्यात (Main Imports and Exports of India)

भारत लगभग 7500 वस्तुओं का आयात तथा निर्यात करता है। भारत के आयात तथा निर्यात निरन्तर बढ़ते जा रहे हैं। भारत के मुख्य आयात एवं निर्यात निम्नलिखित हैं :

4.1 प्रमुख आयात वस्तुएं (Chief Items of Import)

भारत मुख्य रूप से निम्नलिखित वस्तुएं दूसरे देशों से मंगवाता है :

(i) **मशीनरी (Machinery):-** भारत के औद्योगिकीकरण की आवश्यकताओं के कारण सबसे अधिक आयात मशीनों का अमेरिका, इंग्लैण्ड, पश्चिमी जर्मनी, जापान, रूस तथा यूरोप से आयात किया जाता है। 2020-21 में 1,20,329 करोड़ रूपये की मशीनों का आयात किया गया।

(ii) **लोहा तथा इस्पात (Iron and Steel):-** भारत अभी तक लोहे एवं इस्पात के उत्पादन में आत्मनिर्भर नहीं हुआ है। अतः प्रतिवर्ष काफी इस्पात विदेशों से मंगवाना पड़ता है। यह अधिकतर जर्मनी, अमेरिका, इंग्लैण्ड, इटली तथा फ्रांस से मंगवाया जाता है। 2020-21 में 61,288 करोड रुपये का लोहा तथा इस्पात विदेशों से मंगवाया गया।

(iii) **लौह-हीन धातुएं तथा धातुओं का सामान (Non-Ferrous Metals and Metal Products):-** लौह-हीन धातुएं जैसे जिस्त, तांबा, टिन तथा इन धातुओं द्वारा निर्मित पदार्थ हमें दूसरे देशों से मंगवाने पड़ते हैं। ये धातुएं मलाया, ब्राजील, अमेरिका आदि देशों से मंगाई जाती है। 2020-21 में 3,46,844 करोड़ रूपये की वस्तुएं मंगवाई गई।

(iv) **पैट्रोल तथा पैट्रोल उत्पादन (Petroleum and Petroleum Products):-** भारत अपनी मांग का 35 प्रतिशत पैट्रोल विदेशों से मंगवाता है। यह पैट्रोल, ईरान, ईराक, कूवैत तथा सऊदी अरब से आता है। 2020-21 में 6,11,353 करोड़ रूपये का पैट्रोल तथा अन्य पैट्रोल उत्पादन मंगवाया गया।

(v) **यातायात का सामान (Transport Equipment):-** देश के आर्थिक विकास के लिए यातायात के साधनों की बहुत आवश्यकता है। इसके लिये मोटरों, समुद्री जहाज, हवाई जहाज आदि दूसरे सामान विदेशों से मंगवाने पड़ते हैं । यातायात का सामान, अधिकतर जर्मनी, इटली, जापान, अमेरिका तथा ब्रिटेन से आयात किया जाता है। 2020-21 में 1,37,897 करोड़ रूपये का यातायात सामान विदेशों से आयात किया गया।

(vi) **रासायनिक खाद (Chemical Fertilizers):-** भारत में कृषि उत्पादन को विकसित करने के लिए खाद की बहुत आवश्यकता है। अतः रासायनिक खाद काफी मात्रा में आयात की जा रही है। यह खाद अमेरिका, रूस तथा EU के देशों से विशेष रूप से आयात की जाती है। 2020-21 में 56,405 करोड़ रूपये की खाद का आयात किया गया।

(vii) **खाद्यान्न (Foodgrains):-** विभाजन के बाद खाद्यान्नों की देश में बहुत कमी हो गई थी। इस कमी को आयात द्वारा पूरा किया जाता है। खाद्यान अमेरिका, आस्ट्रेलिया, कैनेडा, बर्मा तथा अर्जेन्टाइना से मंगवाये जाते हैं। सन् 1975 में 1,058 करोड़ रूपये का खाद्यान्न आयात किये गए परन्तु हरित क्रान्ति के कारण खाद्यान्न के आयात बहुत कम हो गये। सन् 2020-21 में केवल 1568 करोड़ रूपये के खाद्यान्न विदेशों से आयात किये गये।

(viii) **काजू (Cashewnuts):-** भारत में विदेशों से कच्चा काजू आयात किया जाता है, इसे तैयार करके पुनः निर्यात कर दिया जाता है। वर्ष 1970-71 में 29 करोड़ रूपये के काजू आयात किये गये। 2020-21 में काजू के आयात बढ़कर 7491 करोड़ रूपये हो गए।